IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पुराणों में नारी का महत्त्व

डॉ० हरेन्द्र कुमार शर्मा

सह आचार्य, महाराजा सूरजमल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, पक्का बाग, भरतपुर (राज०)

सारांश

हमारी संस्कृति में नारी का स्थान अत्यन्त ऊँचा है। नारी को देवी के पद पर प्रतिष्ठित किया गया है। अपनी गरिमा, तेजस्विता के कारण भारतवर्ष की नारी सम्पूर्ण विश्व में पूजनीया है। नारी परिवार का केन्द्र बिन्दु है, समाज का आधार है। समय के अनुसार नारी की सोच उसकी मानसिकता में अन्तर आया है। स्त्री के प्रति समाज का भी दृष्टिकोण परिवर्तित हुआ है। कल घर आंगन तक सीमित नारी आज आकाश छूने को तत्पर हैं भारतीय संस्कृति में नारी को देवी का स्थान प्राप्त है जीवन की धारा में नारी पुरूष के साथ मिलकर शक्ति का रूप लेकर साधिका बनती है। नारी सेवा और त्याग की मूर्ति है।

मूल शब्दः— आधुनिक युग, विवाह—विच्छेद, पश्चिमी सभ्यता, नारी।

प्रस्तावना

भारतीय समाज में नारी अपने अच्छे गुणों के कारण एक विशेष स्थान पर प्रतिष्ठित है। जब से पश्चिमी सभ्यता का प्रचार—प्रसार फैला है नारियाँ अपने अधिकार के लिए आगे निकल पड़ी हैं। लेकिन पुराणों में हमें देखने को मिलता है कि नारी कुछ लेना नहीं चाहती है बल्कि वह लोगों को कुछ न कुछ प्रदान करना चाहती है। वह हमारी देवी के समान है। कहीं—कहीं पर नारी की निंदा भी की गयी है लेकिन नारी के आदर्श स्वरूप की प्रशंसा करके भारतीय संस्कृति के इतिहास में नारी की गौरवगाथा को भी रेखांकित किया है। यदि हम पुराणों में वर्णित नारी के स्वरूप को देखें तो नारी केवल नारी जाति को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारतीय समाज के लिए गर्व है। नारी को कई स्वरूपों में देखा जा सकता है। वह एक माँ, पत्नी, बहन, चाची आदि रूपों में हो सकती है। हम देखते हैं कि माँ के लिए जननी, शिवा, देवी,

घृति, गौरी, विजया आदि नामों का उल्लेख किया जाता है। भारतीय समाज में माना जाता है कि माता से बढ़कर कोई गुरु नहीं है तथा गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं है। बालक को पालन–पोषण करने के कारण पुराणों में उसे पिता से बढ़कर बताया गया है ''महाभारत में भी माता का स्थान पिता से उच्च बताया गया है क्योंकि वह मनुष्य को जन्म देने वाली है।'' पुराणों के कई श्लोकों व आख्यानों में माता के रूप को बहुत अच्छी तरह से वर्णित किया गया है। ''कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न विजयी होकर जब रति के साथ द्वारका आते हैं तो वे माँ को प्रणाम करते हैं और माँ उनका मस्तक चूम लेती है।'' माँ का अपने बच्चे के मस्तक को चूमना ही नारी के गौरवशाली मातृत्व को दर्शाता है। ''माता कौशल्या राम के वन जाने की बात सुनते ही पुत्र प्रेम में एकाएक पृथ्वी पर गिर पड़ी।'' इन्हीं के साथ–साथ हमें देखने को मिलता है कि लक्ष्मण की माता सुमित्रा भी पुत्र प्रेम के बावजूद वन जाने की आज्ञा देती है। यह मातृत्व भावना महान चरित्र वाली नारियों का परिचय देती है। पुराणों में हमें माँ का वह रूप भी दिखायी देता है कि जिसमें माँ अपने पुत्रों को अपने उद्देश्य के अनुसार उनका पालन पोषण करती है। माता ही वह प्रथम गुरु है जो कि बच्चे की अपनी संस्कृति का अनुभव कराती है जिसमें बच्चा पल–बढ़कर आगे बढ़ता है। ''मार्कण्डेय पुराण में बताया गया है कि माता मदालसा ने अपने पुत्रों को लोरियों के माध्यम से जो शिक्षा दी वह उन्हें संसार की बुराईयों से जीवन मुक्त कर दिया था।'' ''मदालसा उपाख्यान में लिखा है जो गौ, ब्राह्मण की रक्षा के निमित्त युद्ध में भय रहित चित्त से, शस्त्र से मरता है, उसे ही मनुष्य कहते हैं। जिसके द्वारा याचक, मित्र और शत्रुगण विमुख नहीं होते, उसी से पिता पुत्रवान होता है। जब पुत्र युद्ध में मर जाता या शत्रु पर विजय प्राप्त करके लौटता है तभी स्त्री का गर्भ क्लेश सफल होता है।''

पुराणों में जो कथायें लिखी गयी है उनमें माँ के रूप को जिस प्रकार से दर्शाया गया है। उससे लगता है कि आज भी उनका आदर्श स्वरूप नारियों की रक्षा कर रहा है। इसी के साथ–साथ यह भी संकेत देता आ रहा है कि भारतीय संस्कृति क्या है। आज हमारे देश में यह स्थिति उत्पन्न हो गयी है कि मातृत्व का अभाव सा हो गया है। पुराणों में माँ की जो स्थिति थी वह आज के युग में बहुत दूर होती चली जा रही है। इसीलिए कहा जाता है कि भारत अब मातृत्व के लिए गरीब हो गया है और अन्य क्षेत्रों में आगे बढ़ता जा रहा है। इसलिए आज प्राचीन कालीन माँ के रूप को पुनः उसे स्थापित करने की जरूरत है। इसके माध्यम से हमारी आने वाली पीढ़ियाँ मातृत्व प्रेम को पाने में पूर्णतः सफल होंगी।

पुराणों में पत्नी के लिए बहुत सारे शब्दों का प्रयोग किया गया है। जैसे– ''कान्ता, जाया, निजबधू, पत्नी, प्रियतमा, प्रिया, प्रियांगना, भागिनी, भार्या, बधू, बल्लभा, बल्लभिका, बहू, स्त्री, सहचारिणी, श्रीमती आदि।'' भारतीय समाज में देखा जाता है कि नारी का पति के साथ कोई प्रतिस्पर्धा नहीं होती है। पत्नी को पति का पूरक माना जाता है। पत्नी पति में प्रभु की मूर्ति स्थापित करके वह सब कुछ उसको समर्पण कर देती है। पुराणों में भी इस प्रकार से मिलता है कि स्त्री पुरूष मानसिक रूप से एक हो जाते थे जिसे कोई तोड़ नहीं सकता था। ''मार्कण्डेय पुराण में लिखा गया है कि कुष्ठरोग से पीड़ित पति की पत्नी

शाण्डिली द्वारा सूर्य का उदय रोक देने की कथा पवित्र नारी के अलौकिक तेज को प्रकट करती है।'' इसी प्रकार से सावित्री के बारे में बताया गया है कि ''वह एक महान पतिव्रता नारी है उसके सामने साक्षात् यमराज आकर झुक जाते हैं और उसके पति सत्यवान के प्राण वापस कर देते हैं।'' ''महर्षि अत्रि की पत्नी अनुसूया द्वारा ब्राह्मणी को जिसने पति तप से सूर्य को उदय होने से रोक दिया था, उसके लिए जो उपदेश दिया उसमें एक पवित्र नारी को देखा जा सकता है।'' बड़े–बड़े विद्वान जैसे कालिदास, वाल्मिकी, व्यास आदि ने भारतीय पत्नी को अच्छे रूप में स्थापित किया है। ''रावण ने सीता से बार–बार प्रार्थना किया लेकिन उसकी बातों का उत्तर शान्ति रूप में दिया जो कि एक भारतीय नारी के गौरव का प्रतीक है।''

पुराणों में बताया गया है कि नारी का सामाजिक जीवन उच्च था। बौद्ध युग में नारी को मोक्ष प्राप्ति में बाधक बताया गया है। भगवान बुद्ध भी अपनी पत्नी यशोधरा को छोड़कर चले गये थे। पुराणों में इस प्रकार के नियमों की अवहेलना की गयी है। पुराणों में नारी को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सहायिका माना गया है। ''पति को पत्नी की सदा रक्षा करनी चाहिए। पत्नी पति के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में सहायक होती है। पति–पत्नी जब एक समान होते हैं तो धर्म की प्राप्ति होती है। जब कोई अतिथि आता है तो पत्नी ही उनको जलपान आदि देकर सेवा करती है। कितना भी धन पुरुष क्यों न कमा ले, लेकिन घर पर आने पर यदि पत्नी न हो तो वह सब बेकार है क्योंकि भोजन पकाने का कार्य पत्नी ही करती है। इसलिए पति–पत्नी एक समान धर्म का पालन करते हैं तो सब कुछ मिलता है।'' देखा जाय तो एक पंख से चिड़िया उड़ नहीं सकती है तथा एक पहिए से रथ चल नहीं सकता है वैसे ही बिना पत्नी के कोई भी पुरुष कार्य नहीं कर सकता। इस बात को पुराणों में भी किसी न किसी रूप में स्वीकार किया है।

नारी सृष्टि को आगे बढ़ाने वाली है, पालन करने वाली है तथा कष्ट के समय सान्त्वना देने वाली है। मनुष्य की हर सफलता के पीछे नारी के हाथ को माना गया है। भारतीय नारियों को यदि हम प्राचीन काल से ही देखें तो इन्होंने माँ व पत्नी के रूप में बहुत से कष्ट सहे हैं। पौराणिक कथाओं में हमें देखने को मिलता है कि अपनी गरिमा को बनाये रखने के लिए कितना कष्ट सहना पड़ा है। इतिहास की पुस्तकों में वीर नारियों की कहानियाँ लम्बे अरसे से देखने को मिलती रही हैं। त्याग और बलिदान के कारण ही इनका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित होता चला आ रहा है।

निष्कर्ष

इस प्रकार पुराणों में नारी के विविध पक्षों का चित्रण हुआ है नारी परिवार की धुरी समाज के प्रत्येक कार्यों में पुरुष की सहभागिनी होती थी। सही अर्थों में नारी सेवा और त्याग की मूर्ति है परन्तु आज नारी की स्थिति कुछ भिन्न है। आज परिवार में असंतुलन आ रहा है कारण स्त्री अब ज्यादा शिक्षित है अधिक जागरुक है अपने अधिकारों को जानती है। घर परिवार से परिभाषित होने वाली नारी की आज

एक अलग पहचान बन गयी है। निश्चित रूप से यह विकास एक अच्छा संकेत है क्योंकि एक शिक्षित स्त्री एक शिक्षित परिवार समाज को देती है परन्तु पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर आज की नारी को अपने सहज गुणों सेवा, त्याग, दया, करुणा, और धैर्य को नहीं त्यागना है यह गुण ही उनके आभूषण है। पुरुष की समानता करने में हमें पुरुष नहीं बनना है हमारी शोभा तोनारी पद की गरिमा बनाये रखने में ही है। यदि हम यह सोचे कि हम क्यों समझौता करें तो वह इसलिए क्योंकि पुरुष को इतना धैर्य ईश्वर ने दिया ही नहीं है। स्त्री पृथ्वी के समान धैर्यवान है, शांति सम्पन्न है, सहनशील है। पुरुष में स्त्री के गुण आ जाते हैं तो वह महात्मा बन जाता है और यदि नारी स्त्री सुलभ गुणों को त्याग कर पुरुष बनती है तो उसका पतन होता है। नारी के पास दान देने के लिए दया है, श्रद्धा है, त्याग है अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए तेजस्विता भी है।

संदर्भ

1. शकुन्तला रानी तिवारी, महाभारत में धर्म, (पाटल प्रकाशन, आगरा, 1970), पृ. 337

2. क्षेमराज, श्रीहरिवंश पुराण, अध्याय 108, पद्युम्न का रति सहित द्वारका में आना, (नाग पब्लिकेशन्स, दिल्ली 1985), पृ. 324

3. परमहंस जगदीश्वरानन्द सरस्वती (अनु.), श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणम् (गोविन्द राम हासानन्द, आर्य साहित्य भवन, दिल्ली, 1977), पृ. 88

4. श्रीराम शर्मा, (सं.), मार्कण्डेयपुराण (संस्कृति संस्थान बरेली, उ.प्र. 1969), मदालसा का पुत्र उल्लापन, श्लोक 11–62

5. वही, मदालसा उपाख्यान–2, श्लोक 44–46

6.राममूर्ति चौधरी, हरिवंश पुराणः एक सांस्कृतिक अध्ययन (सुलभ प्रकाशन, लखनऊ 1969), पृ. 89

7. श्रीराम शर्मा, मार्कण्डेयपुराण, प्रथम खण्ड, अध्याय–16, श्लोक 31–32

8. श्रीराम शर्मा, (सं.), मत्स्यपुराण, प्रथम खण्ड (संस्कृति संस्थान, बरेली, 1970) भूमिका, पृ. 27

9. मार्कण्डेय पुराण, दत्तात्रेय माहात्म्य वर्णन, श्लोक 61–63

10. परमहंस जगदीश्वरानंद, वही, पृ. 377

11. श्रीराम शर्मा, मार्कण्डेयपुराण, मदालसा उपाख्यान–2, श्लोक 19–66

12. The Position of Women in Hindu Civilizations, A.S. Altekar, Banaras, 1938.

13. Women in Ancient India, Clarisse Bader, Chowkhamba Sanskrit Series Varanasi, 1964.